OM-19 - 2020 FINAL FILE_Page 1 and 2 28/12/2020 11:29 AM Page 7

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

बदलाव की महसूसता आपको बदल देगी

दृष्टि और वृत्ति को न बदला तो कृति नहीं बदलेगी। अगर कृति न बदली तो विकर्मों में धंसता जायेगा। स्मृति-भ्रंश हो जायेगी और जिसकी स्मृति ही भ्रंश हो जाये, तो गीता के महावाक्य हैं कि उसकी केवल लुटिया ही नहीं डूबती, उसका तो सर्वनाश हो जाता है।

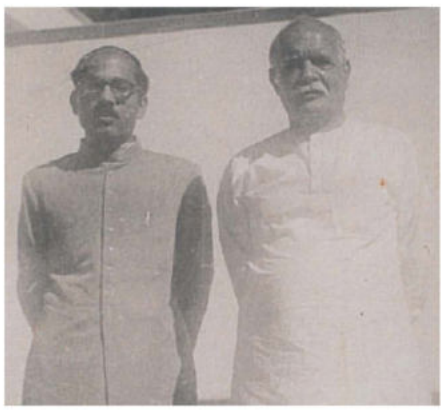

कोई पुरूषार्थी सोच सकता है कि ये जो ऊँची-ऊँची बातें हैं, ये उनकी पहुँच से बाहर हैं और अभी तो वे उससे काफी दूर हैं। कोई तो ये भी कहेंगे कि ये आदर्श हैं, ये व्यवहारिक नहीं हैं। वे यह जानना चाहेंगे कि वे ऐसी गगनचुम्बी अवस्था में अथवा स्थिति के शिखर पर कैसे पहुँचें, उनका मन जो बार-बार मैला हो जाता है, उस धूल-मिट्टी अथवा कचड़े-कीचड़ से कैसे बचे रहें? वे कहेंगे कि उनकी दृष्टि पर तो दूसरों के अवगुणों का चश्मा चढ़ा ही रहता है या उनके दुर्गुण उनकी आँख में धूल के कंकड़ की तरह चुभते ही रहते हैं। आखिर उन्हें आँखें तो खुली रखनी है, तब उनकी दृष्टि कैसे निर्मल बनी रहे? ये प्रश्न हरेक के लिए उपयोगी है। इनके पीछे तब दृष्टि और वृत्ति को बदलने की चेष्टा है। यह चेष्टा संकेत देती है कि उनकी पुरूषार्थ करने की नियत तो है।

ऐसे लोग उन लाखों-करोड़ों से अच्छे हैं जो अपनी दृष्टि-वृत्ति को बदलने की कामना ही नहीं करते। अपनी हालत खराब कर बैठने के बावजूद भी वे इस खराबी के स्वाभाविक होने की बात करते हैं और तर्क-वितर्क से उसे युक्ति-संगत बताते हैं। ऐसे लोगों का बदलना तब तक असम्भव है जब तक उन्हें यह एहसास ही नहीं होता है कि हमें स्वयं को बदलना चाहिए। बदलना आवश्यक है। बदलने के बिना हमारी गति ही नहीं है। आज बदलें या कल, बदलने के बिना कोई दूसरा रास्ता ही नहीं है। मन की गहराई से यदि हम बदलना स्वीकार नहीं करेंगे तो परिस्थितियाँ हमें बदलने पर मजबूर कर देंगी। तब भी यदि हम न बदले तो फिर हम स्वयं को मनुष्य की कोटि में न समझें।

कुत्ता एक ऐसा पशु है जिसकी पूँछ सदा टेढ़ी बनी रहती है। कहते हैं कि एक मनुष्य ने वर्षभर कुत्ते की पूँछ को लोहे की नली में सीधा कसकर रखा। उसने सोचा एक वर्ष काफी होता है,अब तो यह पूँछ सीधी हो गयी होगी। इस दौरान कुत्ता चिल्लाता भी था तो भी उसने उसकी पूँछ पर से नली नहीं हटायी। पर वर्षभर बाद जब हटायी तब वो यह देखकर आश्चर्य चकित हुआ कि कुत्ते की पूँछ वैसी की वैसी टेढ़ी है! ऐसे ही कुछ लोग बदलना ही नहीं चाहते। उनके बारे में तो कहेंगे कि 'अल्लाह खैर करे, खुदा हाफिज़, उन्हें खौफे खुदा ही नहीं है', जो धर्मराज से ही नहीं डरते वे धर्मात्माओं से कहाँ डरेंगे!

अब छोड़ो व्यर्थ बातें सुनने और दूसरों के दुर्गुण देखने की आदत को

जो बदलना चाहे, उनके लिए कल्याणकारी प्रभु ने अनेक विधियाँ, युक्तियाँ अथवा उपाय बताये हैं जिनसे उनकी आत्मा में घुसे हुए संस्कार बाहर निकल जायें और उनका पीछा छोड़ दें। उन सबका तो यहाँ उल्लेख करना सम्भव नहीं है परन्तु एक ऐसी बात को यहाँ हम लिपिबद्ध करना चाहेंगे जोकि किसी अंश में हमारी दृष्टि-वृत्ति को विकृत होने से बचा सकती है। वो यह है कि कई बार हम किसी व्यक्ति से किसी दूसरे की निन्दा सुनकर, चुगली सुनकर, शिकायत सुनकर, अफवाह सुनकर उसे तुरन्त मान जाते हैं और यह सोचने लगते हैं, "अच्छा, वो व्यक्ति ऐसा निकृष्ट है! हमने तो उसके विषय में कभी ऐसा सोचा भी नहीं था।" हम उस बात की जाँच नहीं करते। बल्कि यह देखकर कि कहने वाला व्यक्ति हमारा घनिष्ठ मित्र है, विश्वासपात्र है, हमारे निकटतम है, हम उस बात को दूसरे व्यक्ति की अनुपस्थिति में मान जाते हैं। गोया हम उसकी पीठ में छुरा घोंपते हैं। चाहे वो व्यक्ति निर्दोष ही हो, हम दूसरे के कहने में आकर मन ही मन उससे घृणा करने लगते हैं। जिसे हम अच्छा समझते थे, उसे अब घटिया मानने लगते हैं और कई बार तो दूसरों को कहने लगते हैं कि "अरे, तुम्हें मालूम है कि उस व्यक्ति का तो फलाँ से लगाव-झुकाव है, वो झूठा है, ठग है, बेईमान है, वो केवल बाहर का दिखावा दिखाता है और वाचाल(बोलने में होशियार) है, बाकी उसमें ज्ञान-ध्यान कुछ नहीं है। तुम आगे से उससे बोलना छोड़ दो, उसका संग खराब है। मनुष्य कमर के साथ भारी पत्थर बांधकर पानी में उतरेगा तो डूबेगा ही।

उसके संग वाले का भी ऐसा ही परिणाम होगा। सुना, तुम बचकर रहना।" जब ऐसी दृष्टि-वृत्ति हो जाये तो मनुष्य की अपनी बुद्धि मारी जाती है क्योंकि वो स्वयं अपनी बुद्धि में कंकड़-पत्थर इकट्ठे करने लगता है गोया अपनी ही डूबने की तैयारी करने लगता है। अपने को ज़िन्दा जलाने के लिए अपनी चिता की लकड़ियाँ स्वयं चुनकर लाता है और उनकी सेज बनाता है। अपनी हत्या के लिए अग्नि स्वयं अपने हाथ से जगाता है। उसे किसी करनीघोर ब्राह्मण की आवश्यकता ही नहीं। शमशान पर जलाने की रस्म करने वाले जो पंडित होते हैं, उनकी भी उसे आवश्यकता ही नहीं। वो बिना मंत्र और रस्म के मर जाता है। किसी को उसका जनाज़ा उठाने की भी ज़रूरत नहीं क्योंकि वह तो अपने आप ही चिता पर लेट जाता है। हाय, हम अपने जीवन से यह क्या करते हैं! जैसे कोई चन्दन को जलाकर कोयला बना ले, वैसे ही हम अपने जीवन को भस्म कर देते हैं। अब छोड़ो दुश्मनी को, उसके लिए छोड़ो नफरत को, नफरत को छोड़ने के लिए छोड़ो दूसरों की व्यर्थ बातें सुनने को और दूसरों के दुर्गुणों को देखने की आदत को। अगर यह एक बात भी हम पक्की कर लें तो भी हम उस रास्ते पर चल पड़ेंगे और खुशी,आनन्द तथा मित्रभाव के झूले में झूलते रहेंगे। दृष्टि और वृत्ति को न बदला तो कृति नहीं बदलेगी। अगर कृति न बदली तो विकर्मों में धंसता जायेगा। स्मृति-भ्रंश हो जायेगी और जिसकी स्मृति ही भ्रंश हो जाये, तो गीता के महावाक्य हैं कि उसकी केवल लुटिया ही नहीं डूबती, उसका तो सर्वनाश हो जाता है।

किसके पास... मेरे इन सवालों का जवाब!!!

ब्र.कु. मोनिका,शांतिवन

मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ? ऐसा हमारे साथ ही क्यों होता है? संसार में ये सब क्या और क्यों चल रहा है? अब क्या होगा? कब तक ऐसा चलेगा? क्या ये कभी ठीक नहीं होगा? ये हमारे मन में उठने वाले ऐसे सवाल हैं, जिनका जवाब देने का सामर्थ्य इस संसार के किसी प्राणी या प्रकृति में नहीं...। तो कौन देगा हमारे इन सवालों का जवाब... कौन सुलझायेगा हमारी उलझन...!!

कहते हैं, एक ही दुनिया है जहाँ हम सभी रहते हैं। सभी जीते हैं। दिखता भी कुछ ऐसा ही है। और सच भी है... पर कुछ कुछ। हम सब रह तो एक ही धरती पर रहे हैं, कोई दूसरी धरती नहीं, एक ही आकाश के नीचे, एक मौसम का अहसास करते हुए। लेकिन इस दिखने वाली दुनिया से अलग हमारी बहुत सारी दुनिया है, जिसे हम दुनिया भले ही ना कहें, लेकिन वो ही हमारी दुनिया और हमारी ज़िन्दगी होती है।

जी हाँ, हम हर एक मनुष्य की अपनी-अपनी एक अलग ही दुनिया होती है। सभी अपनी-अपनी दुनिया में ही जीते हैं। न मैं उनकी दुनिया में जीती, न वो मेरी दुनिया में। हमारे 'तन' की दुनिया तो एक ही है पर 'मन' की दुनिया सबकी अलग-अलग।

कोई शोहरत की दुनिया में जीता है, कोई अहं की दुनिया में, कोई धर्म की दुनिया में, कोई माया की दुनिया में, कोई ख्यालों की दुनिया में... वगैरह वगैरह। लेकिन एक दुनिया है, जो एक आवरण की तरह हर एक दुनिया को ढ़के हुए है। जो हर दुनिया के साथ अपना सम्बंध रखती है। वो दुनिया है 'सवालों की'। वो आवरण है 'सवालों का'।

इस सवालों की दुनिया के आवरण को उतारने का प्रयास हम इस धरती पर आते ही प्रारंभ कर देते हैं। एक अबोध बच्चा बचपन से ही खुद को सवालों के घेरे में पाता है। वो अपने हर एक सवाल सबसे पूछता, जवाब ढूंढ़ता रहता है। भले ही वो सवाल सबके लिए बेमायने हों लेकिन उसके लिए बहुत मूल्यवान और आगे बढ़ने की सीढ़ी होती है। धीरे-धीरे बड़े होते-होते उस बच्चे को बहुत से सवालों के जवाब मिल जाते। लेकिन ज़िन्दगी में कुछ सवाल ऐसे होते हैं, जिनके जवाब ढूंढ़ने में पूरी उम्र बीत जाती है। फिर चाहे हम बड़े से बड़े विद्वान ही क्यों न बन जायें! ऐसे कुछ सवाल... मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ? ऐसा हमारे साथ ही क्यों होता है? संसार में ये सब क्या और क्यों चल रहा है? अब क्या होगा? कब तक ऐसा चलेगा? क्या ये कभी ठीक नहीं होगा? ये ऐसे सवाल हैं, जिनका जवाब देने का सामर्थ्य इस संसार के किसी प्राणी, ज्योतिषी, दार्शनिक या वैज्ञानिक के पास नहीं है और ना ही प्रकृति के पास है।

लेकिन कोई एक है जो हमारे इन सभी सवालों का स्पष्ट और सटीक जवाब दे सकता है। जी हाँ, वो एक हैं, हम सभी आत्माओं के परमपिता, जगत नियंता, सृष्टि के रचयिता, परमात्मा। क्योंकि वे इस सृष्टि के आदि, मध्य, अंत को जानते हैं। वे हमारे इस जन्म को ही नहीं, हर जन्म को जानते हैं। हमारे साथ क्या, क्यों हो रहा है और आगे क्या होगा, वो ये सबकुछ जानते हैं, तभी तो उन्हें जानीजाननहार कहते हैं। लेकिन इन उलझन भरे सवालों में उलझे हम मानव, अन्य 'मानवों' से जवाब पाने की उम्मीद रखते हैं! अरे, वे मनुष्य तो खुद अपने बारे में ही कुछ नहीं जानते, तो आपको क्या बतायेंगे! आपकी उलझन को क्या सुलझायेंगे!

हमारे पास भी सभी की तरह ही ऐसे बहुत सारे सवाल थे। अपनी ज़िन्दगी को लेकर, अपने भविष्य को लेकर, संसार के हालात को लेकर बहुत सारी उलझनें थीं। लेकिन जब प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय से हमारा सम्पर्क हुआ, तो यहाँ स्वयं परमशिक्षक, परमसद्गुरू परमात्मा के उन रूहानी वचनों को सुनने का सौभाग्य मिला जिसने हमें इस देह की दुनिया से ऊपर उठने की शक्ति दी और तब उन्होंने हमें हमारा और अपना सत्य परिचय कराया। हमें हमारे बारे में सबसे ज़्यादा और सबसे सही वही बता सकता है जिसने हमें जन्म दिया है। तो वो ही तो हमारा सत्य और अविनाशी पिता है। तो उन्होंने हमें सृष्टि के आदि मध्य अंत का ज्ञान दिया और बताया कि हम सृष्टि के आरंभ में सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी देवता थे, हममें कोई विकार या बुराई नहीं थी। इसलिए हम सदा सुखी भी थे। लेकिन धीरे-धीरे हममें अहं, ईर्ष्या, नफरत आदि बुराइयों ने जन्म लिया और हम माया की राह पर चल पड़े। आज परमात्मा इस सृष्टि के महापरिवर्तन(कलियुग के अंतिम और सतयुगी सृष्टि के आरंभ) के समय हमें ये बता रहे हैं कि हे मेरे लाडले बच्चे, अब इस बुराई की राह को छोड़ो और सत् धर्म की राह पर चलो। क्योंकि ये राह ही तुम्हें तुम्हारे जीवन के हर सवालों की उलझनों से भी निकालेगी और आने वाली सतयुगी सृष्टि में देवी-देवता व महाराजा महारानी पद को प्राप्त करने के योग्य बनायेगी। परमात्मा कहते हैं, तुम मेरी श्रीमत पर चलो, मुझे प्यार से याद करो, तो तुम्हें माया की छाया छू भी नहीं सकेगी। तुम कभी समस्याओं में उलझेंगे नहीं बल्कि सहज उन समस्याओं, सवालों से बाहर निकल अन्य मनुष्यों के लिए एक मिसाल बनेंगे।

तो हे आत्माओं, अपने सवालों का सही जवाब पाना है तो इंसान के पास नहीं, भगवान के पास जाइये। फिर देखना, आपको किसी के पास कभी जाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी।

और अब तो हमारा दिल परमात्मा के लिए यही गुनगुनाता है... कि

ज़रूरी नहीं मेरे हर सवाल का तू जवाब दे,
मुस्कुराकर भी तू मेरी हर उलझन दूर कर सकता है।